सृजन

तुम महज एक खूबसूरत एहसास हो ।
तुम्हें देखा नहीं जा सकता।
नहीं। तुम्हें देखा जा सकता है,
लेकिन, तुम्हें सिर्फ एक खास तरह से
देखा जा सकता है
किसी और तरह से नहीं।
वरना तुम, तुम नहीं रहोगी।
तुम्हें छुआ नहीं जा सकता है।
क्योंकि छूने से तुम,
मैली हो जाओगी।
या फिर कुम्हला जाओगी।
तुम्हें कहा नहीं जा सकता है।
क्योंकि कहने में एहसास कम पड़ जाते है,
या फिर जो कहा जाएगा
उसमें तुम अधिक और कम हो सकती हो।
तुम्हें सुना नहीं जा सकता है
क्यूंकि तुम एक खूबसूरत एहसास हो
जो कि अनदेखा, अनछुआ और अनकहा है
तुम सृजन हो, सच हो, मौलिक हो ।
तुम कला हो।
अगर मैं इस खूबसूरत एहसास को
महसूस कर सकता हूं
तो मैं कलाकार होने की शुरूआत कर रहा हूं
शायद !

संतोष कुमार झा
निदेशक (परिचालन एवं वाणिज्य)
कोंकण रेलवे कॉर्पोरेशन लिमिटेड

कशमकश

कभी हसरतों के काफिले,
कभी नाकामियों के सिलसिले,
कभी ख्वाहिशों के बोझ तले,
दिये ख्वाबों के जले।

कभी उम्मीदों की मंजिलें,
तो कभी हकीकत के फासले,
कभी दुश्वारियों के जलजले,
कभी कुछ कर गुजरने के हौसले।

कभी रास्तों की मुश्किलें,
तो कभी बुलंदियों के फैसले,
कभी सपनों के उजाले,
राह रौशन कर चले।

इन तमाम कशमकश के बीच
इन्सान जिये मरे
बुझे जले
धीरे-धीरे, हौले हौले।